eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

मानवतावादी संत कबीरदास

[1]डॉ0 अम्बिली वी एस
[1]सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग, एन.एस.एस. महाविद्यालय, पन्दलम, पत्तनमतिट्टा (जिला) केरल विश्वविद्यालय, केरल

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

उत्तर भारत में भक्ति को साधारण जनता तक पहुँचाने का श्रेय सबसे पहले रामानन्द को तथा उनके बाद कबीरदास को दिया जाता है। रामानन्द ने भक्ति को एकान्तिक साधना मानते हुए भी मानव मात्र के लिए सुलभ बनाया तो कबीर ने उसे लोक – मानस में सहजता के साथ पेठने का मार्ग प्रदर्शन किया। उन्होंने भक्ति को शास्त्र के बंधनों से मुक्त कर लिया। कबीर के बारे में कहा जाता है कि वह भक्त होने के साथ समाज–सुधारक भी थे। हिन्दु दृ मुस्लिम एकता के समर्थक थे तथा किसी मतवाद में बँधे न होने के कारण स्वतन्त्र उपदेष्टा थे, किन्तु कबीर के जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानव मात्र में समता एवं एकता स्थापित करना ही था। भक्ति की व्यष्टि – साधना के साथ सामाजिक हित में उपयोग बनाना ही सच्ची मानवतावादी दृष्टि समझी जाती है। कबीर की भक्ति दृ पद्धति में यह दृष्टिकोण सर्वाधिक गहराई तक परिलक्षित होता है। कबीर का काम धर्मोपदेश या पुजारी का व्यवसाय नहीं था। जीविका के लिए कबीर ने स्वतंत्र होकर, स्वाभिमान की रक्षा करते हुए, जुलाई का व्यवसाय अपनाया था, अर्थात अपने व्यवसाय की शब्दावली, प्रतीक एवं अप्रस्तुत योजना का अपने काव्य में प्रयोग किया था। वर्तमान समय में जब सब कहीं मानवाधिकार का ध्वंस होता जा रहा है तब कबीर के मानवतावादी विचार बहुत अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं स मानव धर्म के सन्दर्भ में कबीरदास को हम बिना किसी संदेह के अपने संबल के रूप में हमेशा साथ लेकर चल सकते हैं।

बीज शब्द– मानवतावाद, भक्तिमार्ग, भक्तिसूत्र, वर्गवाद, वर्णाश्रम, धर्माडम्बर, प्रपंच।

Introduction

एक निडर एवं मानव प्रेमी व्यक्ति ही एक सच्चा भक्त हो सकता है स संत कबीरदास ऐसे भक्तों का सर्वोत्तम प्रतिनिधि है स उत्तर भारत में भक्ति को साधारण जनता तक पहुँचाने का श्रेय सबसे पहले रामानन्द को तथा उनके बाद कबीरदास को दिया जाता है। रामानन्द ने भक्ति को एकान्तिक साधना मानते हुए भी मानव मात्र के लिए सुलभ बनाया तो कबीर ने उसे लोक – मानस में सहजता के साथ पेठने का मार्ग प्रदर्शन किया । उन्होंने भक्ति को शास्त्र के बंधनों से मुक्त कर लिया स भक्त कबीर ने यह अनुभव कर लिया था कि शास्त्र – मर्यादा के साथ सम्प्रदाय – निष्ठा अनायास ही जुड़ी रहती है और शास्त्र तथा सम्प्रदाय की सीमा में रहकर मानव–गान केलिन भक्ति का सर्वसुलभ मार्ग प्रशस्त नहीं किया जा सकता । कबीर कवि से ज्यादा एक मानवतावादी व्यक्ति थे। धर्म की मजहबी कट्टरता से वे कोसों दूर थे। किसी रूढ़ और अन्ध श्रद्धा से उन्हें कोई

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

मतलब नहीं था। अनुभव की तुला पर ही वे जीवन सत्यों को परखते थे । डॉ.शिवकुमार मिश्र के शब्दों में कहें तो, "ये भक्त निहायत मानवतावादी सोच के भक्त थे, जो धर्म को मनुष्यता की ऊंचाईयों के सन्दर्भ में व्याख्यायित करते थे स कबीर ने धार्मिक–सामाजिक कर्म–कांडो की भर्त्सना जरूर की, पर धर्म को जिस ऊंचाई पर जाकर पारिभाषित किया,जरूरी है कि हम उसे उसी ऊंचाई में जानें और समझें जहाँ धर्म बाह्याचारों से अलग,मेहनत, इमानदारी,सेवा,सादगी, पर–उपकार और सच्चाई का नाम बनता है स "[1]

मानवतावाद और भक्ति का प्रत्यक्ष गोचर सम्बन्ध कबीर से पहले नारद और शांडिल्य के भक्ति दृ सूत्रों में भी लक्षित हुआ था, किन्तु वह पुस्तकीय सन्देश था जो शिक्षित वर्ग की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सका। उनके सूत्रों की मर्यादा में शास्त्र – मर्यादा की प्रच्छन्न बू थी जो अपनी गरिमा बोध न छोड़ सकने के कारण आम जनता में व्याप्त न हो सकी। जब रामानन्द ने अपनी शिष्य–परम्परा में उस वर्ग के व्यक्तियों का समावेश करना आरंभ किया जो स्वमाजिक स्तर के नाम पर निम्न वर्ग के समझे जाते थे, तब भक्ति का रास्ता यथार्थ रूपेण मानवतावादी दृष्टि से प्रशस्त हुआ। कबीर ने इसी मानवतावादी दृष्टि के उन्मेष में व्यापक स्तर पर योग दिया। भक्ति की व्यष्टि – साधना के साथ सामाजिक हित में उपयोग बनाना ही सच्ची मानवतावादी दृष्टि समझी जाती है। कबीर की भक्ति दृ पद्धति में यह दृष्टिकोण सर्वाधिक गहराई तक परिलक्षित होता है।

कबीर का काम धर्मोपदेश या पुजारी का व्यवसाय नहीं था। जीविका के लिए कबीर ने स्वतंत्र होकर , स्वाभिमान की रक्षा करते हुए , जुलाई का व्यवसाय अपनाया था, अर्थात अपने व्यवसाय की शब्दावली, प्रतीक एवं अप्रस्तुत योजना का अपने काव्य में प्रयोग किया था। वे मिल – मजदूर न होकर मालिक और स्रष्टा दोनों थे। अतरू अपने पेशे के माध्यम से कबीर के छोटे–बड़े के भेद को दूर करने की कोशिश की थी। यह कदाचित पहला प्रयोग था जबकि एक भक्त और महात्मा ने अपने साधारण धंधे को उपेक्षित किए बिना महानता एवं श्रद्धा के उत्तुंग शिखर पर पहुँच गया। इस से कबीर की इस दृढ़ –निष्ठा का बोध होता है कि मानव– मानव के बीच भेद पैदा करने में केवल वर्ग, जाति और धर्म ही साधक नहीं होते बल्कि व्यवसाय और धंधों के आधार पर भी समाज में ऊँच–नीच का भेद किया जाता है। कबीर ने इस भेद को चुनौती देकर अपने पेशे को आजन्म स्वीकार किया। कबीर बड़े गर्व और अभिमान से कहते हैं–

"जाति जुलाहा मति को धीर, हरषि हरषि गुण रमै कवीर

मेरे राम की अभै पद नगरी, कहै कबीर जुलाहा ।

तू बाँमन मैं कासी का जुलाहा ॥"2

मानवतावाद की स्थापना केलिए कष्ट – सहिष्णुता, परदुख–कायरता आदि का होना बेहद जरूरी है। मानवतावाद में आस्था रखनेवाला व्यक्ति ही असल में सभ्य एवं सुसंस्कृत मनुष्य है। कबीर ऐसा ही एक सच्चा मनुष्य था जिन्होंने अपने जीवन में पराये दुःख को स्वीकार किया थास अतरू उनका जीवन मानव की भलाई केलिए ही समर्पित था स वे अपने लिए नहीं संमार केलिए रोते और विलाप

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

करते रहे । उन्होंन सभी प्राणियों के लिए अपना अस्तित्व न्योछावर कर दिया था, इस जगत केलिए उन्होंने खुद को मिटा दिया था। उनकी ही वाणी में –

"सुखिया सब संसार है, झाबै अरु सोवें ।

दुखिया दास कबीर है। जागै अरु रोवै ॥"3

मानव– मानव में भेद उत्पन्न करनेवाले बाह्याडम्बरों, मजहबों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों के प्रति जैसा कठोर रुख कबीर ने अपनाया वैसा किसी और साधु–सन्त या भक्त ने नहीं अपनाया था। उनकी राय थी कि मनुष्य की उत्पत्ति एक ही ज्योति से हुई हैतथा एक ही ईश्वर सबमें व्याप्त है। प्रकृति ने सबको एक–से उपकरण दिए हैं, फिर ये भेद क्यों स्वीकार किए जायें और क्यों ऊँच–नीच की खाई खोदकर मनुष्य – मनुष्य के बीच घृणा पैदा किया जाय स उनके ही शब्दों में–

"एक बून्द एक मल–मूतर एक चाम एक गूदा ।

एक जोति तैं सब उपजा कौन ब्राह्मन कौन सूदा ॥"4

वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा के नाम पर उस समय हिन्दू– समाज में छुआछूत के साथ जातियों की अस्पृश्यता का प्रचार हो गया था, जिसको कबीर ने कभी स्वीकार नहीं किया। कोई भी मानवतावादी व्यक्ति इस प्रकार की संकीर्ण भावना को समाज में प्रचलित होते नहीं देख सकता। कबीर जैसे निर्भीक और सत्यवादी व्यक्ति को यह कलंक कभी सुहाया ही नहीं। उन्होंने बड़े कठोर स्वर में इस सामाजिक कलंक को मिटाने का दायित्व उठाया । जन्मजात जाति को भी कबीर ने स्वीकार नहीं किया। सदैव उनकी वाणी से यही स्वर गूँजता रहा कि हम सब हरि की निर्मल ज्योति के किरण हैं। इनमें न तो प्रकाश का भेद है और न वर्ण का। ब्राह्मण और शूद्र का भेद तो वे मानते ही नहीं थे और कहते थे कि ,

"जो तू बांमन बंमनी जाया, तौ आन बाट है क्यों नहि आया।

जो तू तुरक तुरकनी जाया, तो भीतर खतना क्यो न कराया ।।"5

इतनी स्पष्ट और बुलंद आवाज में शायद ही किसी महात्मा ने जातिवाद, धर्मवाद और वर्णवाद पर प्रहार किया हो। इन प्रहार की कठोरता में ही कबीर की दृढ निष्ठा छिपी हुई है। बिना किसी लाग– लपेट के अपनी बात को सबके सम्मुख रखने केलिए जो धैर्य सच्चे धार्मिक व्यक्ति में होता है वह कबीर के बास अतिरिक्त मात्र में था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का यह कथन यहाँ पर अत्यंत उचित मालूम पड़ता है ,"कबीर का रास्ता साफ था स वह हिन्दू–मुस्लिम को शिरसा स्वीकार का समन्वय करनेवाले नहीं थे स समस्त बाह्याचारों के जंजालों और संस्कारों का विध्वंस करनेवाले क्रांतिकारी थे स समझौता उनका रास्ता नहीं था, इस अद्‌भुत शमशेर को उन्होंने क्षण भर केलिए भी रुकने नहीं दिया स"[6]

कबीर के बारे में कहा जाता है कि वह भक्त होने के साथ समाज–सुधारक भी थे। हिन्दु दृ मुस्लिम एकता के समर्थक थे तथा किसी मतवाद में बँधे न होने के कारण स्वतन्त्र उपदेष्टा थे,

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

किन्तु कबीर के जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानव मात्र में समता एवं एकता स्थापित करना ही था। जब उन्होंने अपने चारों और धर्म के नाम पर मनुष्य के बीच भेद भाव को देखा, छल–कपड़ का व्यवहार देखा, वर्ग – भेद के कारण दास वैन्य का प्रसार देखा, तो वे अपने सुख को त्याग मानव की पीड़ा को दूर करने में मनोयोगपूर्वक जुट गए। जिस समाज और युग में वे जीवित थे उसमें सुधार करना इतना सरल नहीं था। किन्तु उन्होंने मानव–जाति के बन्धन मोचन का बीड़ा उठाया। हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियों के अन्धविश्वासों पर कठोर प्रहार करते समय उनको यह स्मरण नहीं रहा था कि कोमलता के स्पर्श की इच्छा रखनेवाली जाति इस प्रहार से तिलमिला उठेगी। वे तो जान–बूछकर ऐसा प्रहार करते थेस किन्तु दोनों जातियाँ उन्हें कठोर – कर्कश जानते हुए भी प्यार से अपनाना चाहती थीं। अतरू प्रो.वासुदेव सिंह कबीर के सम्बन्ध में कहते हैं कि–"कबीर का धर्म सच्चा मानव धर्म है जो मनुष्य को जोड़ता है, तोड़ता नहीं स जिसमें ऐसी सच्चाई है जो सभी धर्मों के मूल में है,किन्तु जो सभी धर्मों के बाह्याडम्बरों और पाखंडों से रहित है स"[7] कबीर की यह उपलब्धि मानवतावाद की ही विजय समझी जानी चाहिए।

कबीर का धर्म भक्ति और मार्ग प्रेम था। उनका ध्येय था कि मनुष्य को यदि कहीं सुख प्राप्त हो सकता है तो वह सिर्फ ईश्वर – भक्ति में ही है और यदि दूसरों के साथ रहकर खुशी हो सकती है तो प्रेम के राज्य में। जहाँ ईश्वर – भक्ति नहीं वह स्थान रहने लायक नहीं और जहाँ प्रेम नहीं वह स्थान श्मशान के समान है। कबीर के जीवन का उद्देश्य बहुत ही स्पष्ट था, उन्होंने मजहब और मतवाद को त्यागकर अपने लिए जो मार्ग स्वीकार किया वह इस दोहे में स्पष्ट जाहिर होता है
,

"निर वैरी निह कामना, सांई सेती नेह ।

विशिया सूँ न्यारा रहै ,सन्तन का अंग एह ॥"[8]

अर्थात वैर–विहीन कामना – विहीन होकर केवल ईश्वर सेस्नेह रखना, विषय–वासनाओं से दूर रहकर साधु–सन्तों के निकट रहनास इसमें जाति, वर्ण, धर्म , मत कोई बाधक नहीं। इसलित कबीर ने अपने धर्म को सहज धर्म कानाम दिया ताकि सहज की प्राप्ति केलिए कठोर साधना और प्रपंच का रास्ता न अपनाना पड़े। कबीर का सहज देखने में सहव होते हुन भी वास्तविक सहानुभूति से ओतप्रोत हैस यह सहज मार्ग मानव–धर्म का सबसे सुखद और सुकर मार्ग है। जो इसपर आकृष्ट हो जाता है, प्रपंचादि से उसकी मुक्ति हो जाती है। कबीर में जब अपने लिए मानवतावाद का मार्ग अपनाया तो उन्होंने कठोर साधनाओं और धर्माडम्बरों को त्यागना जरूरी समझा। परिणामस्वरूप मानव–मात्र कबीर की वाणी और सन्देश के पास पहुँचने में सफल हुआ। कबीर ने कभी किसी मतवाद या पंथ का प्रवर्तन नहीं किया था। मानवतावादी कबीर ने ईश्वर–भक्ति के प्रपंचों को भी चुनौती देने का साहस दिखाया था स इससे पहले किसी और संत ने इतने निडर होकर तटस्थता से ऐसा प्रयास नहीं किया था।

संक्षेपतः कबीर की खंडनात्मक शैली में मानवतावाद की ही पुकार है । कबीर तो मानवतावादी व मानव प्रेमी महान संत थे स वर्तमान समय में जब सब कहीं मानवाधिकार का ध्वंस होता जा रहा

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

है तब कबीर के मानवतावादी विचार बहुत अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं स मानव धर्म के सन्दर्भ में कबीरदास को हम बिना किसी संदेह के अपने संबल के रूप में हमेशा साथ लेकर चल सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. डॉ.ओमप्रकाश त्रिपाठी , डॉ.लता शिरोड़कर (सं)यभक्तिकाल के प्रमुख कवियों का पुनर्मूल्यांकनयपृ.सं .16
2. श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रन्थावली , पृ.सं.42
3. श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रन्थावली , पृ.सं.34
4. श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रन्थावली , पृ.सं.20
5. श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रन्थावली , पृ.सं.38
6. डॉ.पंडित बन्ने,हिन्दी के प्राचीन कवि , पृ.सं.36
7. डॉ.ओमप्रकाश त्रिपाठी , डॉ.लता शिरोड़कर (सं)यभक्तिकाल के प्रमुख कवियों का पुनर्मूल्यांकनयपृ.सं .44
8. श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रन्थावली , पृ.सं.25